अरुणाचल प्रदेश के साहित्यिक विकास में महिलाओं की भूमिका

आरती शर्मा

भारत विभिन्न संस्कृतियों के मेल से बना राष्ट्र है। जहाँ लोगों की संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, पहनावा, बोली-भाषा, तीज-त्योहार, अलग-अलग होने के बावजूद भी अनेकता में एकता का ही बोध होता है। भारत की यही अनेकता में एकता पूर्वोत्तर भारत में देखने को मिलती है। आठ राज्यों अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, असम, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और त्रिपुरा से मिलकर बने पूर्वोत्तर भारत को सात बहनों के नाम से भी जाना जाता है। जहाँ प्रत्येक राज्य का अपना इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, पहनावा, बोली, साहित्य, रीति-रिवाज, तीज-त्योहार और प्रथाएँ एवं बोलियाँ हैं। यहाँ पितृसत्तात्मक और मातृसत्तात्मक दोनों तरह के समाज देखने को मिलते हैं। इन सभी समाजों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, जो इन्हें एक-दूसरे से भिन्न करती हैं।

भिन्न-भिन्न रंगों को खुद में समेटे हुए यह आदिवासी समाज भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हर समाज नारी और नर के साथ ही पूरा होता है। एक के भी बिना विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। दोनों के योगदान से ही किसी भी समाज का विकास होता है। भारतीय संस्कृति के इतिहास में नारी को पूज्यनीय और सम्मानीय माना जाता रहा है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। परंतु भारतीय संस्कृति की यह परंपरा धीरे-धीरे समाप्त होने लगी। स्त्री को मात्र उपभोग की वस्तु समझा जाने लगा। उसको घर-परिवार तक ही सीमित कर दिया गया। वह किसी भी प्रकार के महत्वपूर्ण निर्णय का हिस्सा नहीं हो सकती थी। आज़ादी के पहले और आज़ादी के बाद की परिस्थितियाँ तो बदली पर स्त्रियों की दशा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ।

भारतीय संस्कृति पुरातन है। उसी प्रकार भारतीय साहित्य का भी अपना इतिहास है। जब तक लिपि का आविष्कार नहीं हुआ था, तब तक ज्ञान मौखिक रूप से ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक पहुंचाया जाता रहा। पहले की पीढ़ी अपनी दूसरी पीढ़ी को अपने समाज के संस्कार, रीति-रिवाज, त्योहार, प्रथाएँ और परंपराओं को मौखिक रूप से ही प्रदान किया करती थी, पर लिपि के आविष्कार से ज्ञान को लिपिबद्ध किया गया और पुस्तक के रूप में पीढ़ियों के लिए उस समाज के संस्कारों, रीति-रिवाजों, संस्कृति को सँजो कर दूसरी पीढ़ी के लिए रखा जाने लगा। तब से मनुष्य अपने भावों-विचारों को लिखित रूप में व्यक्त करने लगा। आज भी लोक गीतों की परंपरा लिखित रूप में न होकर मौखिक रूप से ही प्रचलित है। खासकर आदिवासी समाज में प्रचलित लोक गीतों की परंपरा।

आदिवासी समाज भारत के लगभग सभी राज्यों में जल-जंगल-जमीन की संस्कृति को बरकरार किए हुए हैं। प्रकृति से उनका जुड़ाव ही उनकी ज़िंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रकृति के बिना वह अपने जीवन की

कल्पना भी नहीं कर सकते। उनकी संस्कृति में प्रकृति से संबंधित सभी चीजें सूर्य, चाँद, नदियाँ, पर्वत, झरने, पेड़-पौधे, भूमि, आकाश, पक्षी, जीव-जन्तु आदि शामिल हैं। उनका प्रकृति के प्रति यही जुड़ाव अन्य मनुष्य से इनको भिन्न बनाता है। आदिवासी समाज भले ही आज आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करना सीख रहा है, पर अपनी प्राकृतिक संपदा को खोकर वह जी नहीं सकता है।

आदिवासी संस्कृति में भिन्न-भिन्न प्रकार की मान्यताएँ हैं, बोलियाँ हैं, रहन-सहन है, भाषा है, पहनावा है। आदिवासी संस्कृति उनके लोक गीतों में प्रदर्शित होती है। अभी तक आदिवासी लोक-साहित्य लिपिबद्ध नहीं हो सका है। लोक-साहित्य के लिखित रूप में उपलब्ध न होने के कारण इन जनजातियों के बारे में ज़्यादातर तथ्य प्रकाश में ही नहीं आ पाए हैं। आदिवासियों का लोक- साहित्य उनके इतिहास को प्रदर्शित करने वाला होता है। आदिवासी लोक-साहित्य में जनजातीय लोगों के दैनिक जीवन की इच्छाओं-आकांक्षाओं, हर्ष-उल्लासों, दुःख-अवसाद, धारणाओं-मान्यताओं, तीज-त्योहार आदि की अभिव्यक्ति और प्रकृति से संबन्धित चित्र देखने को मिलते हैं।

पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति में यह देखने को मिलता है कि यहाँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक काम करती हैं। चाहे परिवार को संभालना हो या व्यावसायिक कार्य हो आदिवासी महिलाएं बढ़-चढ़ कर अपने कार्यों को करती हैं। आज पूर्वोत्तर भारत की महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं। साहित्य भी इन महिलाओं के योगदान से अछूता नहीं है।

अरुणाचल प्रदेश भारत का ऐसा राज्य है, जहाँ सूर्य की प्रथम किरण उसका स्वागत करती हैं। अरुण और अचल दो शब्दों के मेल से बने इस राज्य में मुख्य रूप से 26 जनजातियाँ और 100 से भी अधिक छोटी जनजातियों के लोग रहते हैं। प्रत्येक जनजाति अपनी बोली या भाषा बोलती है। जनजातियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा के आधार पर ही उनका नामकरण किया गया है। इस राज्य की प्रमुख जनजातियाँ इस प्रकार हैं- आदि, न्यीशी, ऊपतानी, तागिन, मिस्मी, खम्परी, नाईते, वांचो, तंग्शा, सिंग्फो, मोनपा, अका, इत्यादि। शिल्प कार्य में बुनाई, मिट्टी के बर्तन, और टोकरी बनाना अरुणाचल प्रदेश की समृद्ध परंपरा का प्रतीक माना जाता है। यह सब कार्य महिलाएं भी बड़े उत्साह के साथ करती हैं। खम्पती, मोनपा, खंबा और मेंबा जनजातियों की बोली के लिए स्क्रिप्ट है। यहाँ की जनजातियाँ लोक गीतों के संग्रह की परंपरा का निर्वहन करती हैं।

अरुणाचल प्रदेश में आज सक्रिय रूप से लेखन कार्य करने वाली प्रमुख महिला रचनाकार डॉ. जमुना बीनी तादर, डॉ. जोराम यालाम नाबाम हैं साथ ही अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी समाज को अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने वाली अन्य महिला लेखिकाओं में तुम्बम रीबा लिली (उस रात की सुबह उपन्यास), आइनाम इरिंग कवयित्री, सोनम वाङमू भूटिया जिनका मोनपा समुदाय और संस्कृति के विकास में उल्लेखनीय योगदान है। यह लेखिकाएँ अपने समाज की लुप्त होती संस्कृति, आचार-विचार, प्रकृति को बचाए रखने की जिजीविषा, अपने समाज के लोगों में आए सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तन, आदिवासी समाज में नारियों की दशा और व्यथा का चित्रण अपनी रचनाओं के माध्यम से कर रही हैं।

डॉ. जमुना बीनी तादर अरुणाचल प्रदेश में जन्मी मूलतः न्यीशी आदिवासी समाज से संबंध रखती हैं। इनकी रचनाओं में न्यीशी आदिवासी समाज का सजीव चित्रण मिलता है। आदिवासी समाज की लोककथाएँ, प्रकृति के साथ साहचर्य का भाव, ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया पर सवाल। मिथकीय कथाओं का पुनर्पाठ आदि शामिल हैं। इनकी कविताओं में स्थानीयता को प्रमुखता मिली है। स्थानीयता पुरखे-पहाड़, शब्दावली, लोकोक्ति, मिथकीय कथाओं के रूप में सामाजिक-धार्मिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक और साथ ही उनके शिल्प-शैली को भी इंगित करती है। इनका काव्य संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' बहुत ही प्रसिद्ध संग्रह है। पुस्तक में संकलित कविताओं का केंद्रीय भाव प्रकृति की सौंदर्यमय अनुभूति, स्वयं को बनाए रखने और निरंतर अतीत को याद कर वर्तमान से जूझने की जिजीविषा को प्रकट करती है। समय कितना जल्दी बदल जाता है, साथ ही मनुष्य उस समय से एक कदम और आगे चलता है। आज सब कुछ कितना बदल गया है। बचपन की स्मृतियों को याद करते हुए जमुना लिखती हैं "बांस के बने / इस घर में/ चौदह अंगीठियाँ हैं/ ...इन अँगीठियों के/ अगल-बगल/ पूरा परिवार बैठकर दिन भर की/ किस्से-कहानियाँ/ एक-दूसरे को सुनाता/ जल्द ही/ खा पीकर/ सो जाते सब/ कल फिर/ मुँह अंधेरे सबको/ खेतों के लिए/ निकलना है।" अब अंगीठियाँ नहीं रही, न ही पहले जैसे मिलकर कोई गप्प-शप्प ही करता है। कैसे सब कुछ पीछे छूट गया है। आधुनिकता किस प्रकार मनुष्य पर हावी हो गई कि वह अपनी पहचान ही भूलता जा रहा है।

तकनीकों के बढ़ते मायाजाल में आदिवासी भी फँसता चला जा रहा है। अपनी कविता में वह आगे लिखती हैं- "अब हमारा घर/ बनता है कंक्रीट से/ अब हम नहीं/ सोते बहुत जल्द/ रात भर/ टी. वी. मोबाइल फोन/ या लैपटॉप में डूबे रहते हैं/ हमें जोड़े रखता है/ एस. एम. एस., फेसबुक/ और व्हाट्सएप्प अब।" यही हमारा अब जीवन हो गया है। आज व्यक्ति सबके साथ होकर भी अकेला महसूस करता है। जब वह स्वयं को अकेला पाता है तो खो जाना चाहता है अपनी पुरानी स्मृतियों में। अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए, आदिवासी जीवन के मूल में जहाँ से उसने जीवन की यात्रा का शुभारंभ किया था। अपनी कविता 'बचे रहने की उम्मीद' में कवयित्री लिखती हैं- *"तुम्हारे/ आदिवासी-बोध ने बतलाया/ तुम्हें पहाड़ों और जंगलों की ओर/ भागना चाहिए/ वहाँ ऊपर/ दुश्मनों से/ महफूज रहते आए/ अनगिनत काल से/... तुम आश्वस्त होते हो/ कि/ तुम्हारे लोग तुम्हारे बाद भी जीयेंगे/ तुमसे अधिक जीयेंगे/ संसार को बतलाने/ तुम्हारी अद्भुत-अनोखी संस्कृति/ आदिवासी संस्कृति के बारे में।"* लौट जाना अपनी खुशी के लिए नहीं बल्कि अपने समाज को भविष्य के लिए बचाए रखने के लिए। आने वाली नई पीढ़ी को अद्भुत-अनोखी संस्कृति से अवगत कराने के लिए कि आज हमारी संस्कृति को किस तरह खत्म किया जा रहा है। जंगल-जल-जमीन जो आदिवासी समाज का मूल है उसको 'ग्लोबल गाँव' का नाम देकर लूटा जा रहा है। आदिवासी लोगो की खासियत यह है कि उनमें चालाकीपन का भाव नहीं होता। वह बाहरी व्यक्ति की धूर्तता को पहचान नहीं पाते और उनके बिछाए हुए जाल में फँस जाते हैं। जमुना बीनी अपनी कविता 'एक रोचक कथा' में इसी धोखा-धड़ी को व्यक्त करते हुए लिखती हैं- *"जमीन अधिग्रहण के बदले/ मुआवजा का/ लालच दिखाई/ और/ किसानों में/ पहली दफा/ मुआवज़े के/ पैसों का/ स्वाद चखा/ उनकी जीभ को/ यह जायका/ बहुत भाया/ फिर/ होना क्या था/ किसानों की/ किसानी छूट गई/ ...कितनी रोचक/ और/ मनोरंजक है/ किसानी से/ गुंडागर्दी के / रूपान्तरण की यह*

कथा।" शोषण के पूरे तंत्र का सजीव चित्रण जमुना यहाँ करती हैं। आदिवासी अस्मिता आज खतरे में हैं, जिसको बचाने के कार्य में जमुना बीनी भी अपनी कविताओं के माध्यम से सहयोग कर रही हैं।

'पहाड़', 'बचे रहने की उम्मीद', 'नाता मिट्टी का', 'नदी के दो पाट', 'देहात की याद', 'तथाकथित', 'लौटने के इंतजार में', 'वे अलसायें दिन', 'नाजुक तार', 'फुरसत', 'सुनहरा भविष्य', 'माँ', 'मिथुन', 'वे और हम', 'चाँद का कराह' आदि इनकी महत्वपूर्ण कविताएं हैं। डॉ. राहुल अपने लेख 'लौटने की चाह में बचे रहने की उम्मीद' में जमुना बीनी के कविता संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' के संबंध में लिखते हैं कि यह काव्य संग्रह "विषय वैशिष्ट्य के साथ सहज रूप में अभिव्यक्त हुआ है। संवेदना से सराबोर युवा कवयित्री की भाषा में एक प्रवाह है, जो भावों को सहज ही अभिव्यक्त करता है। एक ऐसी भाषा जिसे कवयित्री ने सप्रेम ओढ़ा है, ऐसी भाषा जिसका सच्चे अर्थों में नाभिनाल से कोई संबंध नहीं है। जमुना की कविताओं में संवाद की अधिकता है और कुछ में विवरण। ऐसा जान पड़ता है कि अरुणाचली कवयित्री का अन्तर्मन अंतः संचार कर संवाद करता है, जो कविताओं में प्रतिध्वनित है। संचार की आधुनिक तकनीक के सहारे भी संवादहीनता का यह दौर समाप्त नहीं होता बल्कि बढ़ता ही जा रहा है, तभी तो प्रकृति की तरह उद्दाम मन ऐसे में प्रकृति का साहचर्य ढूँढ़ता है। वह लौट जाना चाहता है अतीत के उन्हीं पगडंडियों पर जिस पर चलकर कंक्रीट के जंगल तक का सफर तय किया है। मन के सांकल को उद्दाम प्रकृति हौले से छू भर देती है और यह बावरा मन अप्रतिम प्रकृति की ओर लौट जाने को बेचैन हो उठता है।"

जमुना बीनी कवयित्री होने के साथ-साथ कहानीकार भी हैं। इनके द्वारा लिखा गया- 'उईमोक' लघु कथा संग्रह है। इस लघु कथा संग्रह में इन्होंने न्यीशी आदिवासी समाज की लोक कथाओं का चित्रण किया है। न्यीशी आदिवासी समाज को जानने, उनकी संस्कृति को समझने, उनके प्रकृति से जुड़ाव और प्रकृति के बीच ही जीवन बसर करने की प्रक्रिया को लेखिका ने अपने लघु कथा संग्रह के माध्यम से व्यक्त किया है। इतनी कम उम्र में ख्याति प्राप्त करने वाली जमुना बीनी के काव्य संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

जोराम यालाम नाबाम अरुणाचल प्रदेश की चर्चित लेखिका हैं। इनके अब तक 'साक्षी है पीपल' कहानी संग्रह, 'तानी मोमेन' लघु कथा संग्रह और 'जंगली फूल' उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। जोराम गद्य साहित्य के अलावा कविताएं भी लिखती हैं। 'साक्षी है पीपल' कहानी संग्रह में कुल 8 कहानियाँ हैं। इन कहानियों की कथा के केंद्र में आदिवासी समाज की स्त्रियाँ हैं। लगभग सभी कहानियाँ स्त्री के अस्तित्व, उसकी पीड़ा, उसके संघर्ष, स्वप्न और मुक्ति की कहानियाँ हैं। अरुणाचल के ग्रामीण पारिवारिक जीवन को बिना किसी बनावटीपन और शैलीगत साज-सजावट के प्रस्तुत किया गया है। ये कहानियाँ मुखर स्वर में अरुणाचल के वन्य आंचलिक परिवेश में जीवन यापन कर रहे अशिक्षित और अर्धशिक्षित लोगों के जीवन की कथाएँ हैं। यह समाज आज भी जनजातीय रूढ़ियों को सहेजकर रखे हुए हैं। इन कहानियों में उन परिवारों में व्याप्त जनजातीय रूढ़ियों से ग्रस्त विसंगतियाँ, शोषण और संघर्ष का यथार्थ चित्रण है। सभी कहानियाँ स्त्री केन्द्रित हैं, जो जनजातीय स्त्री विमर्श को नया आयाम देती हैं। इन कहानियों में लेखिका ने दर्शाया है कि यहाँ

की स्त्रियाँ सुख और दुःख समान रूप से स्वीकार करती हैं। अपनी मर्जी दर्शाते हुए पति की एक के बाद एक शादियाँ करवाती हुई, दोनों वक्त भोजन पकाती हुई, खेत-जंगल में काम करती हुई, सामूहिक उत्सवों में स्थानीय शराब का प्रबंध करती हुई, बार-बार छली जाती हुई, टूटती हुई जीवन जीती हैं। ये स्त्रियाँ सबसे छोटी पत्नी के रूप में अपमान सहती हुई जीती हैं। कभी-कभी वे किसी सौत के हम उम्र पुत्र की ओर आकृष्ट होती हुई दिखाई देती हैं। यालाम की कहानियों में जनजातीय स्त्रियों के जीवन के ऐसे टूटे बिखरे रूप छाए हुए हैं, जो आज की तथाकथित आधुनिक सभ्यता और संस्कृति से रूबरू करवाते हैं।

'साक्षी है पीपल' कहानी संग्रह की मुख्य कहानी है। प्रकृति से वार्तालाप करती हुई लेखिका लिखती हैं- "यहाँ की हवा में चुभन सी क्यों है? क्यों पेड़ों की छायाएँ विचित्र तरीके से नाचती हैं? ये पीपल का पेड़ जैसे कुछ सुन रहा है। जिसके कान हैं, वे सुन लें। इस वादी ने उन्हें देखा था और समझा था। क्यों न हों, वे इसके अपने थे, बेहद अपने। यहाँ के पेड़ों की शाखाओं पर आज बंदर इंतजार करते हैं कि कब कोई मकई की खेती करे और नन्हें-नन्हें कई पैर उनका पीछा करें और वे जीभ दिखाकर भाग जाएँ।" संगलों नदी के तट पर बसा गाँव जो गाँव वालों के लिए माँ है। पास ही जंगल है जिसमें से शेर और अन्य जानवरों की आवाज़ें रातों में लोगों में भय पैदा करती है। एकाएक पड़ोसी गाँव के लोग संगरी गाँव पर रातों-रात तीर कमान से हमला कर सबको मार डालते हैं। बची हुई औरतों को खूंटी से बाँधकर दासी बना लेते हैं। इस हमले का कारण है एक रंगबिया जो संगरी में आता जाता रहता है और वह बाहर से बीमारी लेकर आता है। ऐसे हमले और हादसे उन गाँवों में होते रहते हैं, जिसका साक्षी एक पीपल का पेड़ है जो अरसे से इस तरह की मारकाट को देखता रहा है। यही यहाँ का जीवन है।

कोई भी समाज पूर्णतः निर्दोष नहीं होता। उसमें कोई न कोई कमी अवश्य ही होती है। भारतीय समाज तो वैसे भी स्त्रियों के प्रति क्रूर रहा है। न्यीशी आदिवासी समाज में भी बहु पत्नी प्रथा का प्रचलन रहा है। पत्नी न चाहते हुए भी पति के दूसरे-तीसरे-चौथे विवाह को सहर्ष स्वीकार करने के लिए बाध्य होती है। पति अपनी सभी पत्नियों और बच्चों के साथ एक ही घर में रहता है। बच्चे इन सब चीजों के इतने अभ्यस्त हो चुके होते हैं कि वह अपने पिता से सवाल ही नहीं करते। यालाम की कहानियों में पुरुष पात्र कमज़ोर और विलासी प्रवृत्ति के हैं जो केवल स्त्रियों के प्रति अधिपथ्य का भाव रखते हैं। अधिकतर पुरुष पात्र कोई बड़ा काम नहीं करते, सिवाय "दाब" (तलवारनुमा छुरी) उठाए पत्नियों को धमकाने के। परिवार की सभी स्त्रियाँ अपने खेत में काम करती और स्थानीय दारू "आपोङ" बनाती हैं। आपोङ का सेवन दैनिक खान-पान का हिस्सा होता है ।

यालाम की कहानियों में जनजातीय स्त्रियों के जीवन के ऐसे टूटे बिखरे रूप छाए हुए हैं, जो कि आज की तथाकथित आधुनिक सभ्यता और संस्कृति से रूबरू होते हैं। लेखिका इन असाधारण दांपत्य संबंधों को बिना दुराव के भावमय शैली में प्रस्तुत करती हैं।'क्या सच में वे कभी मिले थे' कहानी स्त्री-पुरुष संबंधों के अपरिभाषित स्वरूप को प्रस्तुत करती है, जहाँ स्त्री छोटी उम्र से ही अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए कई-कई बार पुरुषों के छल का शिकार होकर अंत में आत्महत्या कर लेती है। यह कहानी जनजातीय स्त्रियों के प्रति गाँव से शहर तक व्याप्त पुरुष की भोगवादी और वस्तुवादी मानसिकता को चित्रित करती है। ये कहानियाँ

यहाँ की स्त्रियों के प्रति विशेष सहानुभूति और संवेदना को व्यक्त करती हैं। इन कहानियों में लेखिका द्वारा अनुभूत यथार्थ परिवेशगत मान्यताओं के साथ उजागर हुआ है। अरुणाचल प्रदेश के गाँव और कस्बे (जोराम और ज़ीरो) इन कहानियों में जीवित हो उठे हैं। यहाँ के ग्रामीण जीवन का चित्रण लेखिका की विशेषता है।

इनका 'जंगली फूल' उपन्यास अरुणाचल प्रदेश की न्यीशी जनजाति या कहें तानी समुदाय (जिसमें वहाँ की पाँच जनजातियाँ शामिल हैं) के बीच प्रचलित एक मिथकीय चरित्र 'तानी' को आधार बनाकर लिखा गया है। एक तरह से यह उपन्यास तानी के चरित्र की पुनर्रचना का प्रयास है। इस उपन्यास के लिए लेखिका को वर्ष 2019 का 'अयोध्याप्रसाद खत्री सम्मान' भी मिला है। 'जंगली फूल' उपन्यास एक कबीले के संगठित होने की यात्रा है, जिसका नेतृत्व तानी करता है। अरुणाचल प्रदेश के तानी समुदाय के लोग आबोतानी को 'आदि पिता' मानते हैं। तानी से जुड़ी ढेरों लोक कथाएँ उस समाज में मौजूद हैं। लेकिन उन लोक कथाओं में तानी का जो रूप सामने आया है, वह सकारात्मक नहीं है। वहाँ तानी स्त्री-लोलुप और बलात्कारी के रूप में दिखाई पड़ता है। उसका एक ही उद्देश्य है अपना वंश बढ़ाना और इसके लिए वह अपनी शक्ति का उपयोग स्त्रियों पर करता है। लेखिका तानी के जीवन से जुड़ी इस छवि पर प्रश्न चिह्न लगाती है। लेखिका सहज भाव से पूछती है कि- "क्या वंश बढ़ा लेने मात्र से ही कोई अमर हो जाता है? कोई तो वजह रही होगी जिसके कारण आज तक लोग उसके नाम को भूल नहीं पाए हैं! कोई तो ऐसी वजह रही होगी जिसके चलते लोगों ने उसे पिता कहा होगा।" (जंगली फूल, पृ. 3)

यहाँ लेखिका ने तानी के चरित्र को पुनःसृजित करने का प्रयास किया है। लेखिका ने तानी के भीतर की मनुष्यता, स्त्री के प्रति सम्मान की दृष्टि, अपने कबीले के प्रति प्रेम और पूर्ण निष्ठा की भावना को व्यक्त किया है। अरुणाचल के समाज में, विशेषकर न्यीशी समाज में ऑपरेट हो रहे सामंतवाद और स्त्री के शोषण तथा पुरुषों के विशेषाधिकार को 'जंगली फूल' उपन्यास के एक प्रसंग से खूब अच्छी तरह समझा जा सकता है। लेखिका बताती हैं- "विवाहित महिला किसी गैर-मर्द के साथ पकड़ी गई तो नर्क से भी बदतर सजा उसे मिलती थी।...कई-कई दिनों तक उसे भारी-भरकम लकड़ी के साथ बांध दिया जाता था और उसकी मर्जी के खिलाफ उसके शरीर के साथ कई तरह से खिलवाड़ किया जाता।...मर्द कई-कई पत्नियाँ रख सकते हैं। उनके लिए कोई खास सजा तय नहीं है!" (पृ. 18)

अरुणाचल के आदिवसी समाज में स्त्री को उसकी माँ के गर्भ में आने से ही विवाह के लिए खरीद लिया जाता है। कोई भी व्यक्ति कई सारे मिथुन और ढेर सारी कीमती वस्तुएँ देकर पैदा होने से पहले ही लड़की को विवाह के लिए खरीद सकता है। 6-8 साल की होने पर लड़की को अपने ससुराल जाना पड़ता है। पारिवारिक आर्थिक स्थिति के चलते और लड़के वालों के दबाव के चलते लड़की इनकार भी नहीं कर पाती।

'जंगली फूल' उपन्यास में सिमांग भी काफी समय तक अपने पति के साथ अपने संबंध को ढोती है, यही सोचकर कि- "अगर वह खुद पति को छोड़ देती है, तो उसको वे सारे मिथुन और सारा सामान वापस करना होगा जो उन लोगों ने उसके माँ-बाप को दिए थे।" (पृ. 66) किसी पुरुष के हाथों बिकी हुई स्त्री, जो उसकी पत्नी कहलाती है, उसकी वास्तविक हैसियत और मर्यादा क्या होती है- इसे उपन्यास के उस प्रसंग में देखा जा सकता है जब तानी से मिलने के अपराध में सिमांग का पति तापिक सिमांग और तानी दोनों को कैद कर देता है। वह सिमांग को धमकाता है- "मेरी खरीदी हुई औरत, तेरी इतनी हिम्मत?"(पृ. 69) यहाँ पत्नी का दर्जा महज एक खरीदी हुई औरत से ज्यादा नहीं है। इस प्रकार उपन्यास में स्त्री-पुरुष के संबंध, प्रचलित

मान्यताओं को देखने का अलग नज़रिया और आदिवासी समाज में स्त्री-पुरुष के अधिकारों को बखूबी व्यक्त किया गया है। इसी प्रकार इनका 'तानी मोमेन' लघु कथा संग्रह आदिवासी समाज की लोक कथाओं पर आधारित लघु कथा संग्रह है, जिसमें आदिवासी समाज की लोक परम्पराएँ अपनी जीवंतता के साथ चित्रित हुई हैं।

अतः हम इन महिला रचनाकारों के साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज खासकर आदिवासी समाज की स्त्रियों की दशा-दुर्दशा को समझा जा सकता है। आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपरा, धर्म, इतिहास को समझा जा सकता है। उनके प्रकृति प्रेम को समझा जा सकता है। स्पष्टत: भारतीय संस्कृति परंपरा का मूल इनकी जड़ों में ही बसा हुआ है चाहे वह संस्कृति खान-पान, रहन-सहन, या नृत्य-शैली, या वाद्ययंत्रों की हो। आदिवासी समाज ही भारतीय संस्कृति का मूल वाहक और संरक्षक भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. अनुशब्द. (2017). *पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य*. वाणी प्रकाशन : नई दिल्ली.
2. गुप्ता, रमणिका (2008). *आदिवासी साहित्य यात्रा*. राधाकृष्ण प्रकाशन : नई दिल्ली.
3. जमातिया, मिलन रानी (अनु.). (2014). *कॉकबरक की प्रतिनिधि कविताएं*. मानव प्रकाशन : कोलकाता.
4. पाण्डेय, नन्दकिशोर. (2022) *अरुणाचल प्रदेश की लोक कथाएँ*. प्रभात प्रकाशन: नई दिल्ली
5. तादर, जमुना बीनी. (2018). *जब आदिवासी गाता है*. नई दिल्ली: परिंदे प्रकाशन.
6. तादर, जमुना बीनी. (2022). *अयाचित अतिथि और अन्य कहानियाँ*. समय साक्ष्य प्रकाशन: देहरादून.
7. नाबाम, जोराम यालाम. (2019). *जंगली फूल*. नई दिल्ली: अनुज्ञा प्रकाशन.
8. नाबाम, जोराम यालाम.(2013) *साक्षी है पीपल*. यश प्रकाशन : नई दिल्ली.
9. सं. पन्त, कैलाशचन्द्र. अक्षरा पत्रिका. अंक 199, अक्टूबर-2021, भोपाल
10. तिवारी, विनोद कुमार (संयुक्तांक) *पक्षधर पत्रिका* . जुलाई-दिसंबर, 2018 – जनवरी-जून 2019, अंक 25-26. नई दिल्ली.
11. सं. नारायण शिव (संयुक्तांक), *चिन्तन सृजन पत्रिका*. जनवरी- मार्च 2020 से अक्टूबर- दिसम्बर 2021, अंक 1-8, आस्था भारती : नई दिल्ली.
12. प्रधान सं. शर्मा, बीना. *समन्वय पूर्वोत्तर पत्रिका.* अप्रैल-जून, 2021, अंक -3, केंद्रीय हिन्दी संस्थान : दिल्ली.
13. प्रधान सं. शर्मा प्रो. बीना. *समन्वय पूर्वोत्तर पत्रिका.* अप्रेल-जून, 2020, अंक -2, केंद्रीय हिन्दी संस्थान : दिल्ली.
14. सं. त्रिपाठी, प्रदीप. कंचनजंघा पत्रिका. अंक-1, जनवरी-जून, 2020.
15. (48) डॉ. जमुना बीनी तादर जी के साथ नीशी जनजाति के घर परिवार की महत्वपूर्ण जानकारी - YouTube
16. जमुना बीनी की कविताएँ आदिवासियत की उपेक्षा का प्रतिकार हैं (samkaleenjanmat.in)
17. हिंदी RGU : हम चलें, तो बढ़े सब: लोकानुभव और स्मृति से जुड़ी हैं जमुना बीनी की कविताएँ : प्रो. साकेत कुशवाहा (hindirgu.blogspot.com)
18. जोराम यालाम नाबाम की कविताएँ जीवन की आदिम सुंदरता में शामिल होने का आमंत्रण हैं (samkaleenjanmat.in)
19. साक्षी है पीपल - एम. वेंकटेश्वर (sahityakunj.net)

(***लेखकीय परिचय:*** *आरती शर्मा त्रिपुरा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोध-अध्येता हैं।)*